

मराठी से हिंदी में अनूदित साहित्य (कुर्सी पहियों वाली आत्मकथा के विशेष संदर्भ में)**प्रतुल सत्येंद्र चव्हाण**

शोध छात्र – हिंदी

भाषा एवं वाङ्मय संकुल पुण्यश्लोक

अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर

विश्वविद्यालय, सोलापुर

pratul.chavan1990@gmail.com**प्रस्तावना :**

'अनु' का अर्थ है पीछे और 'वद' का अर्थ है

बोलना। पलटकर बोलना या दोहराना ही ऐसे अनुवाद का अर्थ है। एक भाषा से दूसरी भाषा में 'लिप्यंतरण' को अनुवाद भी कहा जाता है। आज के वैश्वीकरण के युग में एक भाषा के ज्ञान और साहित्य को दूसरी भाषा में उपलब्ध कराने के लिए अनुवाद किया जाता है।

आज अनुवाद न केवल भारत में बल्कि विश्व के साहित्य में एक स्वतंत्र विधा बन गया है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अनुवाद की सहायता से किसी भी विषय और भाषा के साहित्य को किसी भी भाषा में सुलभ बनाया जा सकता है। यही अनुवाद का महत्व है। अनुवादक द्वारा किया गया अनुवाद बहुत ही महत्वपूर्ण विषयों और सन्दर्भों को शामिल करता है, उसका अनुवाद कार्य अनुवाद के क्षेत्र में एक मानक स्थापित करता है। नसीमा हुरजुक द्वारा लिखित आत्मकथा 'चाकाची खुरची' जिसका संपादन डॉ. ने किया था।

उद्देश्य :

- 1) मराठी से हिंदी में अनुवादित साहित्य का अध्ययन करना।
- 2) विकलांगता विमर्श को समझना।
- 3) कुर्सी के पहियों पर आत्मकथा में चित्रित विभिन्न समस्याओं को समझना।

1) विकलांगता चर्चा:

दलित एवं महिला विमर्श से प्रोत्साहित होकर विकलांगता पर विमर्श आज व्यक्ति को सशक्त बनाने की दिशा में सार्थक हो गया है। विकलांगता एक शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक या संवेदी स्थिति है जो अस्थायी या स्थायी रूप से किसी व्यक्ति की एक या अधिक प्रमुख जीवन गतिविधियों को करने की क्षमता को खराब कर देती है।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी:

विकलांगता को एक शारीरिक या मानसिक स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है जो किसी व्यक्ति की गतिविधियों, इंद्रियों और गतिविधियों को सीमित कर देती है। विकलांगता शारीरिक या मानसिक विकलांगता है। इससे व्यक्ति के मन में निराशा उत्पन्न होती है। वह अपने आप को धरती पर बोझ समझने लगता है और उसके मन में हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है। सामान्य अर्थ में विकलांगता एक ऐसी शारीरिक एवं मानसिक विकलांगता है जिसके कारण व्यक्ति अन्य सामान्य व्यक्तियों की तरह कार्य करने में सक्षम नहीं होता है।

2) कुर्सी के पहियों पर आत्मकथा में दर्शाई गई विभिन्न समस्याएं:

पहियों वाली कुर्सी डॉ. यह नसीमा हुरजुक की अनुवादित आत्मकथा है जिसका हिंदी भाषा में अनुवाद डॉ. ने किया है। गिरीश काशिद और डॉ. चंदा गिरीश ने किया। पहियों पर कुर्सी की यह

आत्मकथा अपने आप में एक अनोखी आत्मकथा मानी जा सकती है क्योंकि नसीमा हुरजुक के साहस ने विकलांगता के साथ भी आकाश में उड़ने के उनके सपने को साकार किया है। लेखिका ने अपने जीवन के पहले सोलह वर्ष एक स्वस्थ और सामान्य व्यक्ति के रूप में बिताए, लेकिन भेदभाव के बाद व्हीलचेयर ही उनका एकमात्र सहारा बनी। आरंभिक चरण में लेखक के मन में आत्महत्या करने का विचार आना, फिर उससे उबरने के लिए किए गए प्रयास और प्रगति का वर्णन है। इस सन्दर्भ में लेखक कहते हैं, "मुझे यह सच बताने के लिए किसी ज्योतिषी की आवश्यकता नहीं थी कि मैं हमेशा के लिए लकवाग्रस्त हो गया हूँ। यह जानकर मैं अपने मन की स्थिति नहीं बता सकता। मैंने बचपन में कहानियों में सुना था कि एक राजा का शरीर एक शाप के कारण आधा पत्थर का हो गया था। कई वर्षों के बाद वह शाप से मुक्त हो गया और पूर्ण मनुष्य बन गया। लेकिन मेरे शरीर का कमर से ऊपर पैर की उंगलियों तक का कुछ हिस्सा असंवेदनशील हो गया था। कहानी में वर्णित राजा तो खड़ा हो सकता है, लेकिन मैं जीवन में कभी खड़ा नहीं हो पाऊंगा। मेरे शरीर का एक बड़ा हिस्सा असंवेदनशील हो गया था। "जब लेखक के पिता गांव छोड़कर औरंगाबाद आते हैं तो अपने ही सहकर्मी की धोखाधड़ी के कारण लेखक के पिता की जान चली जाती है। जब लेखिका यह बात अपनी माँ को बताती है तो वह कहती है, "हमारा सोने जैसा व्यक्तित्व चला गया। अब हम इस सोने का क्या करेंगे? हमें चपरासी के बच्चों का ख्याल रखना चाहिए." कोल्हापुर स्कूल में पी. चाय। ऐसा करते समय लगाये जाने वाले कठोर अनुशासन का भी वर्णन किया गया है। मार्च पास्ट के दौरान 'बाएँ और दाएँ' पैर के आदेशों का ठीक से पालन न करने के कारण लेखक को अपमानित किया गया और मार्च पास्ट से बाहर निकाल दिया गया और आठ दिनों के प्रयास के बाद, उत्कृष्ट मार्च पास्ट के लिए लेखक की प्रशंसा की गई लेकिन तब तक पीठ में दर्द शुरू हो गया था।

पहियों वाली कुर्सी की आत्मकथा में विकलांगता पर विजय:

आत्मकथा में लेखक के स्वाभिमान को बार-बार ठेस पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। किसी भी परिस्थिति में कोई समझौता नहीं है, जो प्रस्तुत आत्मकथा में परिलक्षित होता है। "पिताजी की मृत्यु के बाद उनकी बची हुई रकम हमारे पास काफी देर से पहुँची। उन पैसों से माँ ने मेरे लिए एक पहिये वाली कुर्सी खरीदी। हालांकि रोटरी और लायंस क्लब के लोगों ने पहले ही मुझे यह कुर्सी मुफ्त में देने की पेशकश की थी, लेकिन स्वाभिमान के कारण उन्होंने इसे लेने से इनकार कर दिया।" प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लेखिका की स्वाभिमानी मनोवृत्ति को देखा जा सकता है। अपने पिता की मृत्यु के बाद बाबू काका जैसे विकलांग व्यक्ति से प्रेरणा पाकर लेखिका 'हेल्पर ऑफ हैंडीकैप्ड' संस्था की स्थापना करती है। यह संस्था विकलांगता से प्रभावित कई लोगों के लिए काम करती है। इसके माध्यम से यह संस्था विकलांगों को कृत्रिम साधनों की मदद, ऑपरेशन के लिए इलाज में मदद, विकलांग लड़के-लड़कियों की शिक्षा के नवीन उपाय योजना बनाना, तंत्र शिक्षा देकर उन्हें स्वरोजगार के लिए तैयार करना और विकलांगों के विवाह का आयोजन जैसे कार्य करती है। हेल्पर ऑफ हैंडीकैप्ड संस्था के माध्यम से व्यक्ति।

निष्कर्ष:

यह जो मराठी से हिंदी में अनुवादित आत्मकथा प्रस्तुत है, इसमें लेखिका के जीवन की यात्रा का विस्तृत चित्रण देखने को मिलता है। विशेष रूप से, इसमें विभिन्न मुश्किलों और चुनौतियों का सामना करते हुए लेखिका की विकलांगता पर प्राप्त की गई जीत को दर्शाया गया है, और उनका संघर्ष दूसरों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण बन कर सामने आता है। प्रस्तुत आत्मकथा में जीवन की दुखद घटनाओं, जीवन के संघर्षों, शिक्षा के माध्यम से हुई प्रगति-उन्नति-विकास, और प्रेरणादायक अधिकारों के प्रति जागरूकता के दर्शन होते हैं।

संदर्भसंकेत :

- 1) <http://accessible.com>
- 2) <http://www.enebleme.ke>
- 3) डॉ. हुजरूक नसीमा, अनु. डॉ. गिरीश काशीद,
डॉ. चंदा काशीद कुर्सी पाहियोंवाली, राजकमल
प्रकाशन, दिल्ली सं. 2019 पृ. क्र.16

- 4) वही पृ. क्र. 17
- 5) वही पृ. क्र.29
- 6) वही पृ. क्र. 111
- 7) वही पृ. क्र.113

